

आस्तिक से नास्तिक की ओर



• अनिष मौर्या

आस्तिक से नास्तिक की ओर

निर्देशक

अनन्या सिंह

B.A. (BHU)

उपदेशक

पूजा मौर्या

B.A. M.T.T.M (BHU)



• लेखक

अनिष मौर्या

B.Tech (AKTU)



Bharati Prakashan

45 Dharma Sangh Complex, Durgakund
Varansi, Uttar Pradesh, 221005

प्रस्तावना

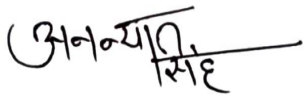
लेखक "आस्तिक से नास्तिक की ओर" मे हमे बताना चाहता है की वो आस्तिक क्यों, कब, कैसे हुआ और नास्तिक की तरफ क्यों निकल पडा।

लेखक आपको आस्तिक और नास्तिक का सही अर्थ समझाना चाहता है, ना की आपको आस्तिक से नास्तिक की ओर ले जाना चाहता है।

लेखक बताना चाहता है की ईश्वर के श्रद्धा, भक्ति मात्र से ही इंसान पूर्ण आस्तिक नहीं होता बल्कि एक सच्चा इंसान बनना पड़ता है, नेकी के रास्ते पर चलना पड़ता है, अगर आप किसी भी गलत रास्ते पर है, तो आप सच्चे आस्तिक नहीं है।

अगर आप नास्तिक होते हुए भी कोई गलत कार्य नहीं करते है तो, एक आस्तिक से जादा अच्छे, साबित होंगे।

अनन्या सिंह (मुख्य सलाहकार)



अनन्या सिंह

आस्तिक से नास्तिक की ओर

माँ की घंटियों की आवाज सुबह-सुबह पूजा घर से निकलते हुए, सोये हुए कानों में कुछ इस प्रकार गुजती थी, की मानो भूचाल ही आ गया हो, भगवान और माँ को कोसते हुए, फिर से सोने की बहुत कोशिश करता, परंतु फिर नींद कहा। ये उन दिनों की बात है, जब मैं ना ही आस्तिक था, और ना ही नास्तिक, बस बचपन से इतना पता था, किसी समस्या आने पर ईश्वर से गिड़गिड़ाना और किसी खुशखबरी आने पर ईश्वर का आशीर्वाद कहना !

अब हम भी धीरे-धीरे ईश्वर की तरफ आकर्षित हो ही रहे थे, हम भी कभी-कभी माँ के पल्लू के पीछे बैठकर ईश्वर की आराधना को देखने लगे थे, परंतु मेरा मन आराधना में कम, चढ़ाए गए प्रसाद की तरफ लगा रहता था, जैस ही माँ पूजा खत्म करती, मैं एक हथेली के ऊपर दूसरी हथेली रखकर माँ के सामने खड़ा हो जाता, फिर माँ मुझे प्रसाद का छोटा टुकड़ा देते हुए ईश्वर से मेरी लंबी आयु की कामना करती ।

इस टुकड़े की लालच में, मैं प्रतिदिन माँ के साथ पूजाघर में बैठने लगा, और एक दिन मैं भी माँ के साथ भजन, आरती

को दोहराने लगा, भजन को दोहराते हुए देख माँ के चेहरे पर मुस्कान आ गई, उस दिन माँ मुझे प्रसाद का बड़ा टुकड़ा देते हुए, जल्दी सफलता, अच्छी सेहत, अपने लिए सुशील बहू और नजाने क्या-क्या मागा,

उस दिन मैं माँ की आखों की तरफ देखते हुए पूछा - क्या ईश्वर के हाथ में सब कुछ होता है,

माँ ने कोमल स्वर में उत्तर दिया - ईश्वर सर्वव्यापी होते हैं, संपूर्ण ब्रमाण्ड के मालिक हैं, सुख- दुख, जीवन- मरण, सही- गलत, सब उनके हाथों में हैं,

मैंने फिर पूछा- जो ईश्वर की आराधना नहीं करते, उनको प्रसाद नहीं चढ़ाते, क्या उन्हें ईश्वर दुख देते हैं? वो गरीब होते हैं?

माँ समझ गई, ये अब प्रश्न पे प्रश्न करेगा.

माँ ने पुचकारते हुए बोला- बेटा तुम्हारे विद्यालय के आने के बाद सारे जवाब दूँगी,

जाओ, अभी तैयार हो जाओ,

मैंने प्रसाद के बड़े टुकड़े को टिफिन-बॉक्स में रखकर, खुशी से तैयार होने लगा ।

उस दिन विद्यालय में भी, मैं अपने प्रश्नों को लेकर उदास था, मेरा मन बाकी विषयों में नहीं लग रहा था, इसी उपरांत लंच के लिए छुट्टी हुई और मैं हमेशा की तरह अपना लंच-

बॉक्स लेकर मैदान की तरफ गया, मैदान के पिछले हिस्से में जाकर अकेले बैठ गया। लंच-बॉक्स खोलने से पहले ही, हमारे सामने एक कुत्ता आकर बैठा गया, कुत्ता मुझे टकटकी निगाहों से कुछ इस प्रकार देख रहा था, मानो उसका वर्षों की प्रेम आज दिखी हो,

हमें कुत्ते की आखों में लाचारी, और चेहरे पर सिर्फ मायूसी दिखा। मैंने अपना टिफिन-बॉक्स खोलकर रोटी का एक छोटा टुकड़ा उसकी तरफ फेंका। कुत्ते ने उसे लपकते हुए तुरंत उठा लिया, अब वो एक कदम और आगे आकर बैठ गया, मैंने उसे एक और टुकड़ा दिया, अब वो लगभग मेरे पास आकर बैठ गया, उसकी चेहरे की लाचारी अब भी उतनी ही थी, अब मैं एक निवाला अपने खाता, दूसरा टुकड़ा उसकी तरफ, ऐसा करने से रोटी का टुकड़ा जल्द ही खत्म हो गया लेकिन प्रसाद का एक बड़ा टुकड़ा अब भी हमारे पास ही था, मैं असमंजस में था, इसको प्रसाद का टुकड़ा देना उचित होगा या नहीं, थोड़ी देर सोचने के बाद, मैंने प्रसाद का पूरा टुकड़ा उसे दे दिया।

मुझे कुत्ते के साथ खाना खाते देख, क्लास के सभी बच्चे हमारे ऊपर हंस रहे थे, बच्चों के सामने मैं हसी का पात्र बन चुका था, मेरा पहले से ही मन उदास था अब और भी बुरा लगने लगा,

अब मैं कभी कुत्ते को कोसता, कभी अपने आप को..

उस दिन जब मैं घर आया, मेरा उतरा हुआ चेहरा देख, माँ ने गोद में उठाते हुए बोला- बेटा क्या हुआ, किसी ने कुछ बोला क्या ?

माँ की प्यार भारी आवाज जैसे ही कानों तक गई, मैं फुट-फुट कर रोने लगा ।

मेरे साथ माँ भी रोने लगी और चुप कराने की कोशिश करने लगी। जैसे-तैसे मैं चुप हुआ, और सारी बात मैंने माँ को बताया,

माँ मुझे प्यार करते हुए घर के अंदर ले गई, मेरा कपड़ा बदला, मूह- हाथ धुलाया, और खाना लेकर आई।

अपने हाथों से खिलते हुए बोला- बेटा सबसे पहले अपने आप को कभी अकेला मत समझना क्योंकि हम सबके शरीर के साथ एक अंतरात्मा जुड़ी होती है, जो हमारे लिए गए फैसलों का निवारण करती है इसलिए हमें कभी भी कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिससे हमारी अन्तरात्मा में डर, लज्जा अशांति हो।

और हमने तुमको बताया ही था, ईश्वर सब जगह होते हैं, हम सब को हमेशा देखते रहते हैं।

माँ ने फिर कहा - जानते हो बेटा, कुत्ते को रोटी खिलाना, और अपने प्रसाद के पूरे हिस्से को उसे देना, तुम्हारे आस्तिक होने का प्रतीक है।

मैंने माँ से पूछा- आस्तिक क्या होता है ?

माँ ने बताया- ईश्वर को अस्तित्व के नजर से देखा जाए तो दुनिया में दो प्रकार के लोग रहते हैं, एक आस्तिक और दूसरा नास्तिक !

ईश्वर में पूर्णरूप से विश्वास करना, उनके पद चिन्हों पर चलना आस्तिक और वही उसका उल्टा, ईश्वर में न विश्वास रखना नास्तिक कहलाता है,

माँ ने बताया- आस्तिकता हमें, दयालु, शांत स्वभाव और सज्जन बनाता है, ईश्वर की पूजा से हमारे मन को शांति प्रदान होती है और हमारी मानसिक बोझ हल्की होती है।

हमने सुबह के प्रश्न को दोहराते हुए बोला- जो ईश्वर की आराधना नहीं करते हैं, उन्हें ईश्वर दुख देता है ?

माँ ने बताया- इंसान के सुख-दुख का निवारण उसके किए गए कर्मों से होता है, ना की आस्तिक या नास्तिक से !

हम जिस प्रकार का कर्म करते हैं, उस प्रकार से हमें सुख-दुख की प्राप्ति होती है।

उस दिन लगभग हमारे सारे जवाब मिल चुके थे, और कुछ सवालों के जवाब अब हमें खुद से भी मिलने लगे थे।

उस दिन के बाद लगभग मैं पूर्ण रूप से आस्तिक हो चुका था, अब मैं माँ के ना रहने पर भी ईश्वर की आराधना और उन्हे भोग लगा देता था और ये भी सच है की मैं क्लास का सबसे शांत और दयालु लड़का था।

और मैं अब भी कुत्ते के दिखने पर उसे रोटी जरूर खिलता, और क्लास मे भी, मेरे ऊपर कोई नहीं हसता।

मैं ईश्वर से प्रतिदिन क्लास मे सबसे ज्यादा अंक पाने के लिए प्रार्थना करता था, लेकिन क्लास मे, एक लड़की और एक लड़के को मैं कभी पीछे नहीं कर पाया।

आज इन सब बातों को लगभग दस वर्ष बीत चुके थे।

आज मैंने माँ को अपने पास बैठाया और सिर झुकाते हुए धीरे से बोला- माँ, आज से मैं नास्तिक हु, अब से मैं ईश्वर मे विश्वास नहीं रखुगा,

माँ बड़ी-बड़ी आखे करते हुए बोली - हे भगवान ! ये क्या बोल रहे हो, पाप पड़ेगा ।

मैंने बोला- माँ मैंने बीस वर्ष की उम्र मे हजारों मंदिरों को देखा है, और नजाने कितने भगवान को तो मैं जानता भी नहीं, माँ मैं किस-किस भगवान के आस्तित्व को मानु।

माँ ने बोला- सबकी अलग-अलग श्रद्धा होती है, लेकिन ईश्वर एक ही होते है।

फिर मैंने बोला- तब ये मंदिर- मस्जिद को लेकर लड़ाईया क्यों होती है? क्यों मजहब के नाम पर आय-दिन दंगे होते हैं? क्या आस्तिकता हमें यहीं बताती है.

माँ को याद दिलाते हुए बोला- उस दिन मंदिर से निकलते हुए, एक दस वर्ष की लड़की, जिसका एक ही पैर था, वो रेंगते हुए, मेरा पैर पकड़ते हुए बोली- भईया..... खाने को कुछ दो ना !

माँ तू मुझे बस इतना बता दे.. की उस लाचार लड़की ने कौनसा गलत कार्य किया है?

माँ ने बोला- हो सकता है की पिछले जन्म का कोई कर्म.....

मैंने माँ की बातों को काटते हुए बोला- हो सकता नहीं, तुमको सच में पता है, या नहीं, इतना बताओ?

माँ ने बोला- नहीं

मैंने बोला - माँ तुमको नहीं, इस पूरे संसार में किसी को नहीं पता होगा, यहाँ तक की उस लड़की को भी नहीं पता।

जब गुनेहगार को अपने गुनाहों के बारे में न पता हो, फिर किस बात की सजा ...

माँ उसे आस्तिक, नास्तिक, कर्म, मजहब कुछ नहीं पता, उसे सिर्फ इतना पता है की, किसी का पैर पकड़ने से हमें खाने को मिलेगा।

सैकड़ों की संख्या में मंदिरों में निकलते हुए लोग, इन लाचार लोगों को नकारते हुए जा रहे थे, क्या यही है, सच्ची आस्तिकता?

माँ कोई व्यक्ति आस्तिक हो तो जरूरी नहीं की वो सही है और उसी प्रकार कोई व्यक्ति नास्तिक हो तो जरूरी नहीं की वो गलत हो।

माँ, जब तक आस्तिकता को आत्मबाध्य ना किया जाए, नास्तिक बने रहना अधिक उत्तम होगा।

आज अंधविश्वास इतना तेजी से फैल रहा है, जो एक व्यक्ति के सोचने और समझने की शक्ति को नष्ट करता है, और उसे सुधार-विरोधी बना देता है ।

मैं विद्यालय में उन दो बच्चों को पीछे इसलिए नहीं कर पाया क्योंकि ईश्वर ऐसा चाहते थे, बल्कि वो दोनों हमसे ज्यादा मेहनत करते थे, मैं ईश्वर की आराधना करके उनको पीछे करना चाहता था, परंतु माँ ईश्वर की आराधना करने से हमें शांति मिलती है, सफलता नहीं।

माँ को समझाते हुए बोला- माँ मैं नास्तिक इसलिए नहीं बन रहा हूँ, की मैं अभिमानी या निरर्थक हूँ बल्कि ईश्वर के अविश्वास ने आज हमारे सभी परिस्थितियों को प्रतिकूल बना दिया है, मैं यथार्थवादी बनाना चाहता हूँ, हमें पता है की मैं हमेशा अपने कोशिशों में कामयाब नहीं हो पाऊंगा लेकिन

इंसान का कर्तव्य है, वो कोशिश करता रहे क्योंकि सफलता संयोग और हालात पर निर्भर करता है ।

माँ मेरे एक भी बात को काट नहीं पाई,
और उठकर जाते हुए दो शब्द बोला- भगवान तुम्हारा भला
करे !

आनिष मौर्या

A handwritten signature in blue ink, reading 'Anish Mourya', with a long horizontal line extending to the right.

नास्तिकता

मैंने, इस छोटी सी उम्र में बहुत
कुछ देखा है,
धर्म के नाम पर आपस में,
तुम्हें लड़ते हुए देखा है।
सोचता हूँ, तुम सब को टोक दु
एक दिन,
पर अपने ही घर में दीया जलते
हुए देखा है।

मैंने कड़ी धूप में, रोड पर, नंगे
बच्चों, को बैठे देखा है,
मैं नास्तिक हूँ साहब.....
पुराना कपड़ा देने के बाद, उनके
मुस्कान में चारों धाम देखा है,
मैंने धर्म रक्षकों को बस फुकते
देखा है,
यू ही दूसरे धर्म पर थूकते हुए
देखा है,
कभी-कभी समझ में नहीं आता
भगवान का भी,
मैंने हर दस कदम पर उनका द्वार
देखा है।

मैंने गुलामी तो नहीं देखी, लेकिन
यू ही लड़ते रहे धर्म, जात के नाम
पर,
तो एक दिन ऐसा जरूर आएगा,
तुम्हारे ऊपर अंग्रेज फिर बैठकर
खाएगा ॥

अनिष मौर्या

